महत्त्वपूर्ण है आध्यात्मिक

काम विज्ञान

- श्रीराम शर्मा आचार्य

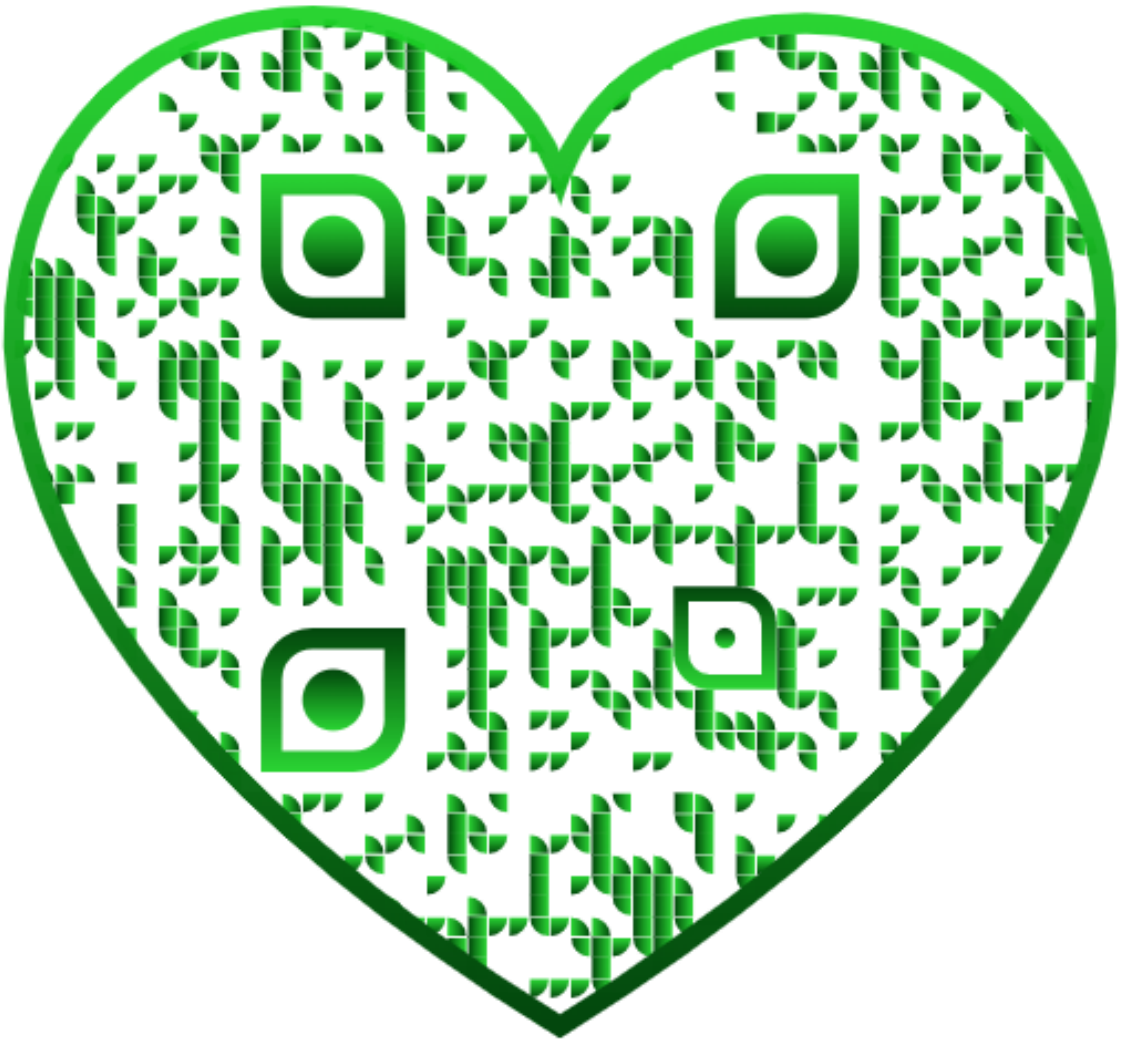

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महत्त्वपूर्ण है आध्यात्मिक कामविज्ञान

लेखक

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा—२८१००३

फोन : (०५६५) २५३०११५, २५३०१२८, २५३०३९९

मो० : ०९९२७०८६२८९, ०९९२७०८६२८७

फैक्स : २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१८ मूल्य : ५.०० रुपये

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि

मथुरा (उ० प्र०)

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

लेखक :

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

मुद्रक :

युग निर्माण योजना प्रेस

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महत्त्वपूर्ण है आध्यात्मिक कामविज्ञान

सृष्टि का संचरण किस क्रिया से होता है; इस संबंध में पदार्थ विज्ञान अणु को प्रथम इकाई मानता है। उनका कहना है कि अणु के अंतर्गत नाभिक तथा दूसरे उप अणु अपना क्रिया-कलाप जिस निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार संचरित करते हैं, उसी में विविध हलचलें उत्पन्न होती हैं और वस्तुओं के उद्‌भव से लेकर शक्ति-उपशक्तियों की विधा विभिन्न क्रम-विक्रमों के आधार पर चल पड़ती है। यह तीस वर्ष पुरानी मान्यता है। विज्ञान की आधुनिकतम शोधों ने बताया है कि अणु आरंभ नहीं परिणति है। सृष्टि का मूल एक चेतना है, जिसे पदार्थ और विचार की द्विधा से सुसंपन्न कहा जा सकता है। इस चेतना को वे प्रकृति कहते हैं। प्रकृति के स्फुलिंग ही परमाणु माने जाते हैं और कहा जाता है कि उन्हीं की गतिविधियों पर सृष्टि का उद्‌भव, विकास और विनाश अवलंबित है।

अध्यात्म विज्ञान इसकी बहुत अधिक गहराई तक जाता है और वह सृष्टि का आरंभ प्रकृति एवं पुरुष के सम्मिश्रण से मानता है। वैज्ञानिक शब्दों में प्रकृति को रयि और पुरुष को प्राण भी कहा जाता है। इसी को शक्ति और शिव कहते हैं। वेदों में इसे सोम और अग्नि कहा गया है। और भी अधिक स्पष्ट समझना हो तो ऋण और धन विद्युत धाराएँ कह सकते हैं। विद्युत विज्ञान के ज्ञाता जानते हैं कि प्रवाह के अंतराल में उपरोक्त दोनों धाराओं का मिलन-बिछुड़न होता रहता है। यह मिलन-बिछुड़न की क्रिया न हो तो बिजली का उद्‌भव ही संभव न हो सकेगा।

प्रकृति और पुरुष के बारे में सांख्यकार की उक्ति है कि वह निरंतर मिलन-बिछुड़न के संघर्ष-अपकर्ष की प्रक्रिया संचरित करते हैं। फलस्वरूप परा और अपरा प्रकृति के नाम से पुकारा जाने वाला वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
सृष्टि-वैभव आरंभ हो जाता है, जिसका प्रथम परिचय हम अणु प्रक्रिया द्वारा प्राप्त करते हैं। क्लाक घड़ियों में पेंडुलम लगा रहता है और गतिचक्र के नियमानुसार एक बार हिला देने पर चलने लगती है। प्रकृति और पुरुष निरंतर उसी प्रकार का मिलन-बिछुड़न क्रम संचरित करते हैं और सृष्टि का क्रियाकलाप दीवार घड़ी की पेंडुलम-प्रक्रिया की तरह चल पड़ता है।

इस सूक्ष्म तत्त्वज्ञान, एक अंतर विज्ञान को और भी अधिक स्पष्ट समझना हो तो उसे नर-नारी एक रूपक दिया जा सकता है। ब्रह्म को नर और प्रकृति को नारी का प्रतीक-प्रतिनिधि माना जा सकता है। सृष्टि का उद्भव विकास और विघटन करने वाली शक्ति त्रिवेणी को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के नाम से पुकारते हैं। यों तत्त्व एक ही है, पर उसके क्रियाकलाप की भिन्नता को अधिक स्पष्टता के साथ समझने-समझाने के लिए तीन देवताओं का नाम दिया गया है। वे तीनों ही सपत्नीक हैं। ब्रह्मा की पत्नी का नाम सावित्री, विष्णु की लक्ष्मी और शिव की उमा प्रख्यात हैं। इस अलंकार के पीछे इसी तथ्य का प्रतिपादन है कि सृष्टि का उद्भव अकेले ब्रह्म से नहीं, वरन प्रकृति के संयोग से होता है। नर और नारी दोनों मिलकर ही एक व्यवस्थित शक्ति का रूप धारण करते हैं, जब तक यह मिलन न हो गति एवं चेतना उत्पन्न ही न होगी और सब कुछ शून्य-निष्प्राण की तरह पड़ा रहेगा। नृतत्व विज्ञान की दृष्टि से पति-पत्नी का मिलन सृष्टि का स्थूल कारण है। संयोग या संभोग से प्रजा उत्पन्न होती है। प्रजनन-प्रक्रिया में मिलन-बिछुड़न क्रम की एक रगड़ संघर्ष जैसी हलचल चलती है। इससे सृष्टि के अति सूक्ष्म क्रियाकलाप का अनुमान लगाया जा सकता है। शरीर का जीवन इसी क्रियाकलाप पर जीवित है। मांसपेशियाँ सिकुड़ती-फैलती हैं और जीवन शुरू हो जाता है। साँस का संचरण, दिल की धड़कन, नाड़ियों का रक्त-संचार, कोशिकाओं का क्रियाकलाप इस मिलन-बिछुड़न की आकुंचन-प्रकुंचन की क्रिया पर ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
निर्भर है। जिस क्षण यह क्रम टूटा उसी क्षण मृत्यु की विभीषिका सामने आ खड़ी होती है। यह तथ्य मात्र देह के जीवन का नहीं, संपूर्ण सृष्टि का है। समुद्र में उठने वाले ज्वार-भाटे की तरह यहाँ सब कुछ उस संयोग पर हो रहा है, जिसे अध्यात्म की भाषा में प्रकृति और पुरुष अथवा रयि और प्राण कहते हैं।

मानव जीवन इसी सर्वव्यापी क्रियाकलाप पर निर्भर है। नर और नारी मिलकर स्थूलजीवन को पुरुष और प्रकृति के संयोग से चलने वाले सूक्ष्म जीवनक्रम की तरह विनिर्मित करते हैं। इसलिए सामाजिक जीवन में नर और नारी का मिलन एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। अपवाद की बात अलग है। विवशता और अति उच्चस्तरीय आदर्शवादिता नर-नारी के मिलन को वर्जित भी रख सकती हैं, पर वह मात्र अपवाद है। उनमें स्वाभाविक नहीं और न सरल विकासक्रम की क्रम-व्यवस्था का ही समावेश है। स्वाभाविक जीवन नर-नारी के सुयोग-संयोग से विकसित होता है। इस तथ्य को स्वीकार करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

यह संयोग मात्र प्रजनन के लिए नहीं है और न इंद्रिय तृप्ति के लिए। वंशवृद्धि और आह्लाद की आवश्यकता इन क्रियाओं को अपनाने के लिए भी प्रेरणा कर सकती है, पर नर-नारी के मिलन के आधार पर बनने वाला संयोग मूलतः दोनों की प्रसुप्त चेतनाओं को जगाने के लिए जन्म से लेकर मरणपर्यंत तक यह आवश्यकता समान रूप से बनी रहती है। बचपन में माता का स्तन पीना, गोद में खेलना, लाड़-दुलार एक आवश्यकता है। मातृविहीन लड़के और पितृविहीन लड़कियाँ मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुत हद तक अविकसित रह जाते हैं। बहन-भाइयों का साथ खेलना परिवार की शोभा है। जिन घरों में केवल लड़के ही लड़के हैं या लड़कियाँ ही लड़कियाँ हैं, उनमें सर्वतोमुखी प्रतिभा का विकास बहुत कुछ रुका रहता है और मानसिक अपूर्णता को वहाँ सहज ही देखा जा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
सकता है। यौवन के आँगन में प्रवेश करते ही दांपत्य जीवन की व्यवस्था जुटानी पड़ती है। ढलती आयु में यह जरूरत पुत्र और पुत्रियों को गोद में खिलाते हुए पूरी होती है। इस प्रकारांतर में नर-नारी आपस में प्राय: गुँथे ही रहते हैं और अपनी-अपनी विशेषताओं के कारण एकदूसरे की प्रतिभा की प्रसुप्त शक्तियों को जगाने की महत्त्वपूर्ण भूमिका स्थापित करते रहते हैं।

मनोविज्ञानशास्त्री डॉ. फ्रायड ने मानव जीवन के विकास की सबसे महती आवश्यकता 'काम' मानी है। जिसे वह नर और नारी के मिलन से विकसित होने वाली मानता है। चूँकि अपने देश में 'काम' शब्द प्रजनन-क्रिया एवं संयोग के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है, इसलिए वह अश्लील जैसा बन गया है और उसे हेय दृष्टि से देखा जाता है। इसलिए फ्रायड की उपरोक्त मान्यता अपने गले नहीं उतरती और न रुचती है। पर यदि उसे वैज्ञानिक परिभाषा के आधार पर सोचें और शब्दों के प्रचलित अर्थों को कुछ समय के लिए उठाकर एक ओर रख दें, तो इस निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ेगा कि सृष्टि के मूल कारण प्रकृति पुरुष के मिलन से लेकर दांपत्य जीवन बसाने तक चली आ रही काम-प्रक्रिया विश्व की एक ऐसी आवश्यकता है, जिसे अस्वीकार करने में केवल आत्मवंचना ही हो सकती है।

दुरुपयोग हर वस्तु का निषेध है। अति को सर्वत्र वर्जित किया गया है। अविवेकी मनुष्य ने हर इंद्रिय का दुरुपयोग करने में कोई कसर नहीं रखी है। संयम और ब्रह्मचर्य के महत्त्व को समझते हुए; मर्यादाओं के अंतर्गत रहते हुए तत्संबंधित कामोल्लास का लाभ लिया जाए, तो उससे हानि नहीं लाभ ही होगा। हानि तो दुरुपयोग से है। सो दुरुपयोग अमृत का करके भी हानि उठाई जा सकती है और सदुपयोग विष का भी किया जाए, तो उससे भी आश्चर्यजनक लाभ उठाया जा सकता है। हेय काम-प्रवृत्ति नहीं भर्त्सना उसके दुरुपयोग की जानी चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नर-नारी का मिलना जितना ही प्रतिबंधित किया जाएगा, उतनी ही विसंगतियाँ उत्पन्न होंगी। सच तो यह है कि अनावश्यक प्रतिबंधों ने ही हेय काम-प्रवृत्ति को भड़काया है। बच्चा माँ का दूध पीता है उसे स्तन-स्पर्श से कुछ भी अश्लीलता प्रतीत नहीं होती है और न लज्जा जैसी कोई बुराई दीखती है। आदिवासी क्षेत्रों में, पिछड़े कबीलों में स्त्रियाँ प्राय: छाती नहीं ढकती। वहाँ किसी को इसमें अश्लीलता और काम-विकार भड़काने वाली कोई बात ही प्रतीत नहीं होती। ये मानसिक कुत्साएँ और मूढ़ मान्यताएँ ही हैं, जिन्होंने नारी के स्तन जैसे परम पवित्र और अभिवंदनीय अंग को विकारों का प्रतीक बनाकर रख दिया। यह विचार विकृति का दोष ही है कि अति स्वाभाविक और अतिसामान्य नारी की एक कुत्सा गढ़कर खड़ी कर दी है। काम का विकृत स्वरूप जिसने मनुष्य की एक प्रकृतिप्रदत्त दिव्य सामार्थ्य को कुत्सित बनाकर रख दिया, वस्तुत: हमारी बौद्धिक भ्रष्टता ही है। पशु-पक्षी नग्न रहते हैं। उनकी जननेंद्रियाँ बिना ढकी रहती हैं। सभी साथ-साथ खाते-सोते हैं, पर बिना अवसर की माँग हुए दोनों पक्षियों में से कोई किसी की ओर ध्यान तक नहीं देता, आकर्षित होना तो दूर। मनुष्यकृत गर्हित कामशास्त्र को यदि जला दिया जाए और प्रकृति की स्वाभाविक प्रेरणा और जीवन विकास के पुण्य-प्रयोजन के लिए उस संजीवनी शक्ति का सदुपयोग किया जाए, तो काम-क्रीड़ा गर्हित न रहकर जीवनोत्कर्ष की महती आवश्यकता पूर्ण कर सकने में समर्थ बनाई जा सकती है।

आध्यात्मिक कामशास्त्र की जानकारी हमें सर्वसाधारण तक पहुँचानी ही चाहिए। भले ही उस प्रशिक्षण को अवांछनीय या अश्लील कहा जाए। सृष्टि के इतने महत्त्वपूर्ण विषय, जिसकी जानकारी प्रकृति जीव-जंतुओं तक को करा देती है, उसे गोपनीय नहीं रखा जाना चाहिए। खासतौर से तब जबकि इस महत्त्वपूर्ण विज्ञान का स्वरूप लगभग पूरी तरह से विकृत और उलटा हो गया हो। जो मान्यताएँ चल रही हैं, वे ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
चलने दी जाएँ। सुलझे हुए समाधान और सुरुचिपूर्ण प्रविधान यदि प्रस्तुत न किए गए तो विकृतियाँ ही बढ़ती, पनपती चली जाएँगी और उससे मानवजाति एक महती शक्ति का दुरुपयोग करके अपना सर्वनाश ही करती रहेगी।

आध्यात्मिक काम विज्ञान नर-नारी के निर्मल सामीप्य का समर्थन करता है। दांपत्य जीवन में उसे इंद्रिय तृप्ति और काम-क्रीड़ा द्वारा उत्पन्न होने वाले हर्षोल्लास की परिधि तक बढ़ाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त वह सौम्य, सामीप्य अप्रतिबंधित रहना चाहिए। जिस प्रकार दो नर या नारी चाहे वे किसी वय के हों, निर्बाध रूप से हँस-बोल सकते हैं और स्नेह सामीप्य बढ़ा सकते हैं और उससे कुछ भी अनुचित आशंका नहीं की जाती। इस प्रकार नर-नारी का परस्पर व्यवहार भी निर्मल और निष्कलंक रखा जा सकना अति सरल है। इस सौम्य-सरलता को प्रतिबंधित नहीं किया जाना चाहिए। प्रतिबंधपरक प्रयोग पिछले बहुत दिनों से चले आ रहे हैं और उनके निष्कर्षों ने उस मान्यता की निरर्थकता ही सिद्ध की है। परदे की प्रथा चलाकर हमने क्या पाया? केवल इतना भर हुआ कि नवागंतुक वधुएँ अपनी ससुराल का जो अविच्छिन्न स्नेह पा सकती थीं, अनुभवी गुरुजनों का परामर्श प्राप्त कर सकती थीं, अपनी कठिनाइयों की चर्चा करके समाधान पा सकती थीं, उनसे वंचित रह गईं। उन्हें ससुराल का वातावरण पितृगृह से उतना भिन्न और विपरीत लगा जितना स्वच्छंद विचरण करने वाले पक्षी की आँखें बंद करके चारों ओर से परदा लगाकर रखे गए पिंजड़े में बंद किए जाने की स्थिति में हो सकता है। कई भावुक लड़कियाँ तो इस जमीन-आसमान जैसे परिवर्तन से बुरी तरह घबरा जाती हैं और उन्हें हिस्टीरिया सरीखे भय, भूत-प्रेत, घबराहट जैसी अनेकों मानसिक बीमारियाँ उठ खड़ी होती हैं। ऐसी स्थिति में हीनता की भावना बढ़ना नितांत स्वाभाविक है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह स्वाभाविक प्रक्रिया एक कदम भी जीवित न रह सकी। परदे का उद्देश्य रत्ती भर भी सफल न हुआ। उसका उद्देश्य नर और नारी के बीच पारस्परिक आकर्षण को रोकना था। वह कहाँ पूरा हुआ? नव वधू केवल ससुराल में सास-ससुर, जेठ आदि गुरुजनों से परदा करती है। जो वस्तुत: उसे बेटी जैसी ही समझ सकते हैं। जिनसे खतरा है, उनके लिए तो परदा फिर भी खुला रह सकता है। यदि व्यभिचार की रोक-थाम की समस्या है तो उसकी सबसे अधिक गुंजाइश पितृगृह के स्वच्छंद वातावरण में रहती है। ससुराल में भी बाहर के लोगों से हाट-बाजार में, मेले-ठेले में किसी से भी मुँह खोलकर बातें की जा सकती हैं।

अध्यात्मतत्त्वज्ञान की मान्यताएँ नर-नारी के बीच की उन अवांछनीय दीवारों को तोड़ना चाहती हैं, जो मनुष्य को मनुष्य से पृथक करती हैं और एकदूसरे का सहयोग करने में अस्वाभाविक, अप्राकृतिक प्रतिबंध उत्पन्न करती हैं। यौन-विकृतियों और व्यभिचार के खतरों को रोकने के दूसरे तरीके हैं। एकदूसरे से सर्वथा पृथक रखने वाली प्रक्रिया इस प्रयोजन को पूरा नहीं करती। आधी जनसंख्या को इन प्रतिबंधों के नाम पर अपंग बनाकर हम अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मार रहे हैं। सारी समस्या का एकमात्र कारण वह बौद्धिक भ्रष्टाचार है, जिसने नारी को कामिनी और रमणी का अतिरंजित चित्रण करके उसे एक भयावह चुड़ैल के रूप में प्रस्तुत कर दिया।

नर और नारी के बीच पाए जाने वाले प्राण और रयि, अग्नि और सोम, स्वाहा और स्वधा तत्त्वों का महत्त्व सामान्य नहीं असामान्य है। सृजन और उद्भव की, उत्कर्ष और आह्लाद की असीम संभावनाएँ उसमें भरी पड़ी हैं; प्रजा उत्पादन तो उस मिलन का बहुत ही सूक्ष्म-सा स्थूल और अति तुच्छ परिणाम है। इस सृष्टि के मूल कारण और चेतना के आदि स्रोत इन द्विधा संस्करण और संचरण का ठीक तरह मूल्यांकन किया जाना चाहिए और इस तथ्य पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि इनका सदुपयोग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
किस प्रकार विश्व-कल्याण की सर्वतोमुखी प्रगति में सहायक हो सकता है उनका दुरुपयोग मानव जाति के शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य को किस प्रकार क्षीण-विकृत करके विनाश के गर्त में धकेलने के लिए दुर्दांत दैत्य की तरह सर्वग्रासी संकट उत्पन्न कर सकता है? परिष्कृत कामतत्त्व हेय नहीं अभिनंदनीय है। इसकी महत्ता और उपयोगिता दर्शनीय और अभीष्ट है।

इस समस्त विश्व में शक्ति का अनंत सागर लहलहा रहा है। ब्रह्मा की दो पत्नियाँ होने की चर्चा पुराणों में आती है। एक का नाम सावित्री दूसरी का गायत्री है। एक को परा प्रकृति दूसरी को अपरा प्रकृति कहते हैं। दूसरे शब्दों में इन्हें जड़-चेतन सृष्टि कह सकते हैं। जड़शक्ति वह है, जो अणुशक्ति के पीछे काम करने वाली प्रेरक सत्ता से आरंभ होती है। नाभिक न्यूक्लियस के अंतराल में भरी हुई अगणित और अद्भुत गतिविधियों और दिशा-विदिशाओं के रूप में जिसका परिचय प्राप्त किया जाता है। भौतिक जगत इसी का पसारा है। इंद्रियों से जिनका स्वरूप देखा-समझा जाता है एवं इंद्रियातीत वे शक्तियाँ जिनको उपकरणों से पकड़ा जा सकता है, वे सभी दृश्य-अदृश्य शक्तियाँ भी हलचल से शून्य नहीं हैं। पर उनमें चिंतन क्षमता न होने से जड़ कहते हैं। जड़ प्रकृति का अर्थ गतिहीन नहीं। शक्ति में गति न हो तो फिर वह शक्ति कैसी? बोल-चाल की भाषा में उसे जड़, दार्शनिक चर्चा में उसे परा-पौराणिक, अलंकारों में उसे सावित्री कहते हैं। जितना कुछ यह जगत देखा-समझा जा सकता है, उसे सावित्री कहना चाहिए। जो कुछ विचार की, भावना की, उत्साह की शक्ति है, उसे गायत्री कहते हैं। पुराणों का उपरोक्त आलंकारिक उपाख्यान यही प्रतिपादित करता है कि ब्रह्मपरमेश्वर अपनी परा और अपरा प्रकृति के जड़ और चेतन विभूतियों के माध्यम से समस्त सृष्टि का उद्भव, पोषण और प्रत्यावर्तन करता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य इन परा और अपरा प्रकृतियों का सजीव सम्मिश्रण है। शरीर पंचतत्त्वों का बना होने से जड़ है। आत्मा विचारशील और भाव संपन्न होने से चेतन है। जड़ और चेतन का यह संयोग ही मनुष्य की अद्‌भुत प्रतिभा का स्रोत है, जिन निम्न वर्ग वाले जीव-जंतुओं का चेतन जितना निर्बल है, वे उतने ही पिछड़े हुए हैं। हम इसीलिए अगणित संपदाओं और विभूतियों के अधिपति बन सके कि इस काया में उत्कृष्ट स्तर की परा और अपरा प्रकृति को कर्त्ता ने भली प्रकार नियोजित कर दिया है।

काया में दो केंद्र इन दोनों शक्तियों के हैं। सावित्री जड़ परा प्रकृति का केंद्र है। मूलाधारचक्र यहाँ कुंडलिनी महाशक्ति अत्यंत प्रचंड स्तर की क्षमताएँ दबाए बैठी है। पुराणों में इसे महाकाली के नाम से पुकारा गया है। मोटे शब्दों में इसे कामशक्ति कह सकते हैं। काम-शक्ति का अनुपयोग-दुरुपयोग किस प्रकार मनुष्य के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है, उसे आध्यात्मिक काम विज्ञान कहना चाहिए। इस शक्ति का बहुत सूझ-बूझ के साथ प्रयोग किया जाना चाहिए; यही ब्रह्मचर्य का तत्त्वज्ञान है। बिजली की शक्ति से अगणित प्रयोजन पूरे किए जाते हैं और लाभ उठाए जाते हैं, पर यह होता तभी है, जब उसका ठीक तरह प्रयोग करना आए, अन्यथा चूक करने वाले के लिए तो वही बिजली प्राणघातक सिद्ध होती है।

कामशक्ति को गोपनीय तो माना गया है, जिस प्रकार धन कितना है, कहाँ है आदि बातों को आमतौर से लोग गोपनीय रखते हैं। उसकी अनावश्यक चर्चा करने से अहित होने की आशंका रहती है। इसी प्रकार कामतत्त्व को गोपनीय ही रखा गया है। पर इसकी महत्ता, सत्ता और पवित्रता से कभी किसी ने इनकार नहीं किया। यह घृणित नहीं, पवित्रतम है। यह हेय नहीं अभिवंदनीय है। भारतीय अध्यात्मशास्त्र के अंतर्गत शिव और शक्ति का प्रत्यक्ष समन्वय जिस पूजा-प्रतीक में प्रस्तुत किया गया है, उसमें इस रहस्य का सहज ही उद्‌घाटन हो जाता है। शिव को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
पुरुष की जननेंद्रिय और पार्वती को नारी की जननेंद्रिय का स्वरूप दिया गया है। उनका सम्मिलित विग्रह ही अपने देवमंदिरों में स्थापित है। यह अश्लील नहीं है। तत्त्वत: यह सृष्टि में संचरण और उल्लास उत्पन्न करने वाले प्राण और रयि, अग्नि और सोम के संयोग से उत्पन्न होने वाले महानतम शक्ति-प्रवाह की ओर संकेत है। इस तत्त्वज्ञान को समझना न तो अश्लील है और न घृणित, वरन शक्ति के सद्भाव, विकास एवं विनियोग का उच्चस्तरीय वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारभूत एक दिव्य संकेत है। यदि ऐसा न होता, अपने त्रिकालदर्शी और ईश्वर समकक्ष स्तर पर पहुँचे हुए तपपूत ग्रंथि, भगवान शिव और उनकी स्फुरण शक्ति का समन्वय मंदिरों में स्थापित न करते। हेय तो हर वस्तु का दुरुपयोग ही होता है। अमृत भी दुरुपयोग से विष बन सकता है। कामशक्ति स्वयं घृणित नहीं। घृणित तो वह विडंबना है, जिसके द्वारा इतनी बहुमूल्य ज्योति धारा को—शरीर को जर्जर और मन को अध:पतित करने के लिए अविवेकपूर्वक प्रयुक्त किया जाता है। सावित्री का कुंडलिनी का प्राण-काम पतित कैसे हो सकता है? वह तो देवता की पंक्ति में अति सम्मानपूर्वक विराजमान होता रहा है। जो जितना उत्कृष्ट है, विकृत होने पर वह उतना ही निकृष्ट बन जाता है और एक तथ्य है।

ब्रह्म की दूसरी पत्नी शक्ति गायत्री जिसे विचारणा एवं भावना कहते हैं। अपने स्थान पर अति महत्त्वपूर्ण है। मानवीय चिंतन का उचित निर्देशन उसी के द्वारा होता है। ऋतंभरा प्रज्ञा ही नर-पशु को नर-नारायण बनाता है। समस्त धर्मशास्त्र, तत्त्वज्ञान, स्वाध्याय, सत्संग, मनन-चिंतन उसी की क्षेत्र-परिधि में आता है। उसके प्रकाश विस्तार पर कोई प्रतिबंध न होने से अतीत से लेकर अद्यावधिपर्यंत बहुत कुछ कहा-सुना जाता रहा है। अखण्ड ज्योति में भी उसी की चर्चा होती रही है। चर्चा जिसकी नहीं, वह सावित्री ही थी। कुंडलिनी शक्ति की गोपनीयता का उद्घाटन करने से कतराने की ही परंपरा चली आई है। गोपनीयता की मर्यादा जहाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
तक रही, वहाँ तक उसे तंत्रविद्या के माध्यम से किसी-न-किसी रूप में कहा जाता रहा। पर जब दुरुपयोग का विग्रह, उग्र से उग्रतर होने लगा और बात अश्लीलता तक पहुँच गई, उसके प्रयोक्ता आसुरी दुष्टता को अपनाने लगे तो उसकी चर्चा और भी अधिक अस्पर्श हो गई। तंत्रकाल जब तक रहा, तब तक स्नायु मंडल में थिरकती हुई इस महाकाली की विवेचना और साधना सम्मानित बनी रही। दस महाविद्याएँ जिनकी साधना से भौतिक जीवन में ऋद्धि-सिद्धियों का अद्‌भुत संचरण होता है, तंत्र विज्ञान की आधार स्तंभ हैं। इन दस देवियों का पूजा-प्रकरण हमने अपने तंत्र विज्ञान ग्रंथ में लिखा भी है, पर गहन क्षेत्र में प्रवेश करने पर स्पष्ट हो जाता है कि वस्तुस्थिति पूजा-उपासना तक सीमित नहीं। उन्हें जीवन को ज्योतिर्मयी शक्तिपीठ ही कहना चाहिए। दस विद्याएँ मात्र पूजा-साधना में प्रयुक्त होने वाली देवियाँ नहीं हैं, वरन मानवीय चेतना की समस्त क्रिया-प्रक्रियाओं में व्याप्त शक्ति निर्झरणी है, जिनमें स्नान अवगाहन करने पर मनुष्य सामान्य न रहकर असामान्य बनता है और तुच्छता का कलेवर उतारकर महानता की भूमिका में प्रवेश करता है।

समय आ गया है कि कामविद्या के तत्त्वज्ञान का संयत और विज्ञान-सम्मत प्रतिपादन करने का साहस किया जाए और संकोच का यह परदा उठा दिया जाए कि इस महान विद्या की विवेचना हर स्तर पर अश्लील ही मानी जाएगी, उसे हर स्थिति में गोपनीय ही रखा जाना चाहिए। यह संकोच मानवजाति को एक महान लाभ से वंचित ही रखे रहेगा। चर्चा करने वाले को लोग हलके स्तर का समझेंगे। उसकी गरिमा घटेगी यह अपराध ही है। शरीर शक्ति का शिक्षण करने वाले उपाध्याय जननेंद्रियों का स्वरूप समझाने में झिझककर अपने छात्रों को उस महत्त्वपूर्ण ज्ञान से वंचित नहीं करते। यदि यह संकोचशीलता न तोड़ी जाती तो यौन रोगों के चिकित्सक कहाँ से आते? प्रसव सहायता और गर्भाशयों की शल्य-क्रिया कैसे संभव होती? संकोच वहाँ उचित है, जहाँ कुत्साएँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
भड़कने की आशंका हो। प्रतिबंध पशुता भड़काने वाली अश्लीलता, कामुकता, वासना की आत्मघाती प्रवृत्ति के प्रसारण पर होना चाहिए। सृष्टि की संचरण-प्रक्रिया और मानव जीवन की अतिशय महत्त्वपूर्ण एवं प्रेरक प्रवृत्ति की दिशा-विदिशा जानने से वंचित रहना, वस्तुत: अपने ही पैरों कुल्हाड़ी मारना है। उचित ज्ञान के अभाव में ही प्रक्षिप्त ज्ञान को विस्तार मिलता है।

काम-वासना मनुष्य जीवन की एक अति प्रबल प्रवृत्ति है। उसकी हलचल मस्तिष्क को उद्वेलित करती ही रहती है। फलत: व्यक्ति उस संबंध में कुछ-न-कुछ कहने-सुनने, पूछने-बताने, पढ़ने-जानने के लिए भी खोज-बीन करता रहता है। उच्चस्तरीय जानकारी न होने से उसे घटिया, विकृत और अवांछनीय सामग्री हाथ लगती है, जिससे आत्मघात करने का ही पथ प्रशस्त होता है। इस स्थिति से बचने की दृष्टि से भी यह आवश्यक है कि काम-प्रवृत्ति की तथ्यपूर्ण जानकारी सर्वसाधारण को उपलब्ध रहे और उसके आधार पर उसे अपने व्यक्तित्व विकास एवं संतुलन में सहायता मिलती रह सके।

आध्यात्मिक काम-विज्ञान का प्रथम पाठ आज की स्थिति में भारतीयों को यह पढ़ना चाहिए कि ये प्रकृति और पुरुष की समीपता एवं एकता को तात्त्विक दृष्टि से देखें और उसका समन्वय वैसे ही करें, जैसे कि एक ही शरीर में रहने वाले इन दो तत्त्वों का सहज भाव से बना चला आता है। मस्तिष्क प्राण का, अग्नि का, ब्रह्म का प्रतीक है। मूलाधार कामसंस्थान रयि का, सोम का प्रतीक है। दोनों एक ही शरीर में घुले-मिले पास-पास रहते हैं। दोनों की यह स्थिति कोई उपद्रव उत्पन्न नहीं करती, वरन एक की अपूर्णता को पूर्णता में विकसित करती है। दो पृथक अंगों की सीमा में विकसित होकर यही प्रक्रिया एक से दो में और दो से बहुत में विकसित होती है। नर और नारियाँ दोनों ही मनुष्य हैं और दोनों के अस्तित्व में प्रत्यक्षत: कोई बड़ा अंतर नहीं है। दोनों की योग्यता,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
मर्यादा और क्षमता लगभग एक ही माननी चाहिए। पर यदि सूक्ष्मता की गहराई में जाया जाए तो उनकी मूल प्रकृति में पाया जाएगा—नर जहाँ प्राण का, पौरुष का, अग्नि का बाहुल्य रख रहा होगा; वहाँ नारी सोम की, सौजन्य की भावना का प्रतिनिधित्व कर रही होगी। दोनों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं और उनका महत्त्व समान रूप से मूल्यवान है। दोनों एकदूसरे के विरोधी नहीं पूरक हैं। इसलिए उन्हें परस्पर अछूत की तरह नहीं रहना चाहिए। पिछले दिनों सामंतवादी युग में नारी का बहुत ही दुःखद और दुर्भाग्यपूर्ण चित्रण कर दिया गया। उसे स्वर्ग की देवी के उच्च स्थान से घसीटकर वेश्या जैसे नारकीय स्तर को चित्रित किया गया। कामिनी और रमणी मात्र उसे रहने दिया गया। कला के नाम पर केवल घृणित वासना की प्रतिमूर्ति नारी को सँजोया गया। गीत, काव्य, चित्र, मूर्ति, अभिनय, नृत्य, साहित्य आदि कला के जितने भी स्वर थे सबने मिलकर नारी को यौन-लिप्सा की पूर्ति में प्रयुक्त होने वाली भोग-सामग्री के रूप में प्रतिपादित किया। मस्तिष्क उसी साँचे में ढलते चले गए और नारी का वेश-विन्यास ऐसा अभ्यस्त करा दिया गया, जिससे वासना भड़काना ही उसका एकमात्र लक्ष्य दीखने लगे। नारी को जिस कुरुचिपूर्ण साज-सज्जा में अलंकृत आज सर्वत्र देखा जाता है, उसके पीछे सामंतवादी युग की बनी दुरभिसंधि काम कर रही है। यों तत्त्वतः नारी का यह घोर अपमान है कि वह नर की वासना भड़काने वाली साज-सज्जा को स्वीकार कर ले।

नारी का जो स्वाभाविक स्थान है, वह उसे मिलना ही चाहिए। समाज में उसे पुरुष का पूरक बनकर रहना चाहिए, नारी की अछूत अस्पर्श की स्थिति जो इन दिनों बनी हुई है, उसका एकमात्र कारण वह रुग्ण मनोवृत्ति है, जिसके अनुसार नारी का अस्तित्व कामसेवन भर मान लिया गया है। यदि उसे बहन, बेटी, माँ, सखा और पूरक मान लिया जाए तो जिस प्रकार दो पुरुषों के सान्निध्य से काम-प्रवृत्ति भड़कने का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
कोई डर नहीं रहता, उसी प्रकार नर-नारी के बीच भी अकारण कलुष-कषाय उत्पन्न न हो। वासना या विकार के लिए न नर का अस्तित्व दोषी है और न नारी का। केवल मनोवृत्ति दोषी है, जो अवांछनीय तत्त्वों में मौजूद भ्रम-जंजाल के रूप में कागज के रावण की तरह बनाकर खड़ी कर दी गई।

सर्वसाधारण को यह समझाया जाना चाहिए कि नारी न भोग्या है, न रमणी और न कामिनी। यह भी मनुष्य ही है, अगणित विभूतियों की धनी है। नर की पूरक है। दोनों हिल-मिलकर सहयोगी-सहचर की तरह रहें यही स्वाभाविक, उचित और न्यायसंगत है। प्रतिबंधों के पीछे जिस व्यभिचार पर नियंत्रण की बात सोची जाती है, वह सर्वथा निरर्थक है। व्यभिचारमात्र क्रिया नहीं है, वस्तुतः वह दूषित दृष्टि ही है। जिसमें दृष्टि दोष भरा पड़ा है, वह अविवाहित भी व्यभिचार का दंड भुगतेगा और जिसकी भावनाएँ पवित्र हैं, वह विवाहित रहते हुए भी ब्रह्मचारी है। हमें इसी प्रवृत्ति का विकास करना चाहिए और रमणी-कामिनी की भाषा में सोचना बंद कर देना चाहिए।

कला के नाम पर जिन दुष्ट-दुरात्माओं ने नारी को वेश्या का स्थान देने की ठान ठानी है, उन्हें अपराधियों की पंक्ति में खड़ा करना चाहिए। परस्पर पूरक रहकर सहयोग और सद्भाव की, स्नेह और सौजन्य की भावनाओं का विकास करते हुए ही हम अवांछनीय एवं स्वाभाविक स्थिति का समाज विनिर्मित कर सकते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से तो यह नितांत आवश्यक है। प्राण और रयि की समीपता के बिना आंतरिक उल्लास का उद्भव ही न हो सकेगा। माना कि बिना पत्नी के सरसता, बहन के बिना सौहार्द, पुत्री के बिना स्नेह की धाराएँ सूखी ही पड़ी रहेंगी और नारी को अछूत मानने वाला नर मरघट में रहने वाले प्रेत-पिशाच की तरह एकाकीपन की आग में जलता रहेगा। इसी प्रकार प्रतिबंधित नारी भी मणिविहीन सर्प की तरह खोई-खोई भूली-भटकी-सी अशांत और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
उद्विग्न बनी रहेगी। इस अवांछनीय स्थिति को जिस गर्हित काम विज्ञान ने उत्पन्न किया है उसे बहिष्कृत, परिष्कृत करना ही होगा। अन्यथा ब्रह्म भी प्रकृति के सान्निध्य की तरह नर-नारी का स्नेह सद्भाव बढ़ने से सृष्टि का, मानव समाज का, सौंदर्य और प्रकाश बढ़ेगा ही घटेगा नहीं।

यौन संपर्क एक विशेष प्रक्रिया है। उसके पीछे अग्नि और सोम के मिलन से उत्पन्न एक विद्युत संचार की विशेष प्रक्रिया सन्निहित है, इसलिए उसकी उपयुक्तता और पवित्रता पर अधिकतम ध्यान रखा जा सकता है। पर वह प्रयोजन अनावश्यक प्रतिबंधों से न हो सकेगा। यह प्रतिबंध तो उस दुष्ट मान्यता को ही बल देंगे, जिसके अनुसार व्यभिचार के अतिरिक्त और किसी प्रयोजन के लिए नर-नारी चर्चा ही नहीं कर सकते। वर्तमान प्रतिबंधों की अवांछनीयता समझी जानी चाहिए और उन्हें इस दृष्टि से शिथिल एवं समाप्त किया जाना चाहिए कि नर-नारी स्वेच्छा से सद्भाव की महत्ता स्वीकार करें और सौजन्य के साथ रह सकें तथा प्रगति की दिशा में एकदूसरे के पूरक बनकर साहसपूर्ण कदम बढ़ा सकें।

शरीरशास्त्री और मनोविज्ञानवेत्ता यह बताते हैं कि नर, नर का सान्निध्य, नारी, नारी का सान्निध्य मानवीय प्रसुप्त शक्तियों के विकास की दृष्टि से इतना उपयोगी नहीं, जितना कि भिन्न वर्ग का सान्निध्य। विवाहों के पीछे सहचरत्व की भावना ही प्रधान रूप से उपयोगी है, सच्चे सखा-सहचर की दृष्टि से परस्पर हँसते, खेलते जीवन बिताने वाले पति-पत्नी यदि आजीवन कामसेवन न करें, तो भी एकदूसरे की मानसिक एवं आत्मिक अपूर्णता को बहुत हद तक पूरा कर सकते हैं। मनुष्य में न जाने क्या ऐसी रहस्यमय अपूर्णता है कि वह भिन्न वर्ग के सहचरत्व से अकारण ही बड़ी तृप्ति और शांति अनुभव करता है। अविवाहित जीवन में सब प्रकार की सुविधाएँ होते हुए भी एक उद्विग्नता, अतृप्ति और अशांति बनी रहती है। विवाह के बाद एक निश्चितता-सी अनुभव होती है। साथी की प्रगाढ़ मैत्री का विश्वास करके व्यक्ति अपनी समर्थता दूनी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
ही नहीं, दस गुनी अनुभव करता है। एकाकी जीवन में जो शून्यता थी उसकी पूर्ति तब होती है, जब यह विश्वास बन जाता है कि हम अकेले नहीं दूसरे साथी को लेकर चल रहे हैं, जो हर मुसीबत में सहायता करेगा और प्रगति के हर स्वप्न में रंग भरेगा। यह विश्वास मन में उतरते ही मनोबल चौगुना बढ़ जाता है और उत्साह भरी कर्मठता और आशा भरी चमक से जीवनक्रम में एक अभिनव उल्लास दृष्टिगोचर होता है। विवाह का मूल लाभ भिन्न वर्ग के सान्निध्य से होने वाले उभयपक्षीय सूक्ष्मशक्ति-प्रक्रिया का अति महत्त्वपूर्ण प्रत्यावर्तन तो है ही, एक मनोवैज्ञानिक लाभ अंतरंग का एकाकीपन दूर करना और समर्थता को द्विगुणित हुई अनुभव करना भी उज्ज्वल भविष्य की संभावना की आशापूर्ण भविष्य की दृष्टि से बहुत उपयोगी है।

कामसेवन विवाहित जीवन में आवश्यकतानुसार मर्यादाओं के अंतर्गत होता रहे तो उसमें कोई बड़ा अनर्थ नहीं है। पर उसे आवश्यक या अनिवार्य न माना जाए। मोटेतौर से पति-पत्नी की परस्पर मन:स्थिति वैसी ही होनी चाहिए, जैसे दो पुरुष या दो नारियों की सघन मित्रता होने पर होती है। सखा, साथी, मित्र, स्नेही का रिश्ता पर्याप्त है। कामुक और कामिनी को दृष्टि में रखकर किए गए विवाह घृणित हैं। रूप, रंग, शोभा, सौंदर्य के आधार पर उत्पन्न हुआ आकर्षण एक आवेश मात्र है। उस आधार पर जो जोड़े बनेंगे वे सफल न हो सकेंगे। रूप, यौवन की सारी चमक एक छोटा-सा रोग बात-की-बात में नष्ट करके रख सकता है। फिर कोई दूसरा अधिक सुंदर आकर्षण सामने आ जाए तो मन उधर लुढ़क सकता है। रूपवान में दोष-दुर्गुण भरे पड़े हों तो भी निर्वाह देर तक नहीं हो सकेगा। हो सकता है कि कोई काला कुरूप व्यक्ति योगी अष्टावक्र, नीतिज्ञ चाणक्य अथवा पाँचाली द्रोपदी की तरह उच्च मन:स्थिति धारण किए हो। रूपवती नर्तकियाँ, अभिनेत्रियाँ, नट-नायक कोई उच्च भावनाशील थोड़े ही होते हैं। बंदीगृह में क्रूर कर्म करने के दंड में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
अगणित नर-नारी आते रहते हैं। उनके कुकर्मों का विवरण सुनकर रोमांच खड़े हो जाते हैं। रूप-रंग के आवरण में उनके भीतर प्रेत-पिशाच का वीभत्स नृत्य देखकर दिल दहल जाता है। विवाह का वास्तविक आनंद और लाभ जिन्हें लेना हो, उन्हें साथी का चुनाव करने में रंग-रूप की बात उठाकर ताक में रख देनी चाहिए। केवल सद्भावना, निष्ठा, सौजन्य, उदारता, दूरदर्शिता, उत्साह और हँसमुख प्रकृति जैसे सद्गुणों पर ही ध्यान देना चाहिए। सज्जनों के बीच चिरस्थायी मैत्री का निर्वाह होता है। दुर्जन तो क्षण भर में मित्र बनते हैं और पल भर में शत्रु बनते देर नहीं लगती। अभी बहकावे की मीठी-मीठी बातें कर रहे थे, अभी तनिक-सी बात पर खून के प्यासे बन सकते हैं। प्रेम के जाल में ऐसे ही लोग दूसरों को फँसाते फिरते बहुत देखे जाते हैं। इसलिए विवाह की सोचने से पहले साथी के चुनाव की कसौटी निश्चित करनी चाहिए और वह यह होनी चाहिए कि रंग-रूप कैसा ही क्यों न हो, साथी की आंतरिक स्थिति में स्नेह- सौजन्य का समुचित पुट होना ही चाहिए। जिन्हें ऐसा साथी मिल जाए, समझना चाहिए कि उनका विवाह करना सार्थक हो गया।

कामसेवन के संबंध में उपेक्षा-वृत्ति बरती जानी चाहिए। इस प्रयोग का स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। कम ही लोग ऐसे होते हैं, जिनके पास अपनी शारीरिक-मानसिक आवश्यकता की पूर्ति के अतिरिक्त इतना ओजस् संचित रहे जिसे क्रीड़ा-कलोल में व्यय कर सके। आमतौर से वर्तमान परिस्थितियों में लोग इतनी ही शक्ति उपार्जित कर पाते हैं, जिसके आधार पर किसी प्रकार काम चलता रहे और गाड़ी लुढ़कती रहे। इस स्वरूप उत्पादन को यौन संपर्क में अपव्यय किया जाएगा तो उसका प्रभाव सीधा स्वभाव, स्वास्थ्य और जीवन-यात्रा पर पड़ेगा। विषयी मनुष्य अपनी श्रमशीलता, तेजस्विता, स्फूर्ति, नीरोगता, प्रतिभा, स्मरणशक्ति, साहसिकता, स्थिरता, संतुलन आदि की सभी शारीरिक-मानसिक विशेषताएँ खोते चले जाते हैं। यह अपव्यय जितना बढ़ता है, उतना ही खोखलापन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
बढ़ता चला जाता है। आसक्ति का शिकंजा अपने गले में कसा जाना हर कामुक व्यक्ति निरंतर अनुभव करता रहा है। यह एक प्रकार से स्वेच्छापूर्वक, हँसते-खेलते मंदगति से की जाने वाली आत्महत्या ही है।

प्रजनन जब उचित और आवश्यक हो तो उचित मर्यादाओं के अंतर्गत कामसेवन में ढील छोड़ी जा सकती है। यदि अपनी या साथी की तंदुरुस्ती या मन:स्थिति ठीक न हो तो इस प्रकार की छेड़छाड़ का कोई तुक नहीं रह जाता। पति-पत्नी के बीच इस प्रकार का धैर्य, संतुलन रहना ही चाहिए कि जब तक अति आवश्यक न हो, दोनों की पूर्ण सहमति न हो, तब तक इस प्रसंग को उपेक्षित ही किया जाए। साथी की अनिच्छा रहने पर उसे विवश करना एक प्रकार से बलात्कार जैसा अपराध ही है, भले ही वह विवाहित साथी के साथ किया गया हो। कानून उसे भले ही दंडनीय न माने, पर नैतिक दृष्टि से उसे निर्लज्ज बलात्कार ही कहा जाएगा। ऐसा प्रसंग जिससे साथी का मन रोष या क्षोभ से भर जाए, निश्चित रूप से कामुक पक्ष के लिए हर दृष्टि से हानिकारक सिद्ध होगा। क्षणिक उद्वेग शांत करके जितनी प्रसन्नता पाई गई थी, कालांतर में उसकी प्रतिक्रिया अनेक गुनी अप्रसन्नता की परिस्थिति लेकर सामने आवेगी। अस्तु, हर समझदार पति-पत्नी को आदि से अंत तक ऐसी मन:स्थिति विनिर्मित करनी चाहिए कि कोई किसी को कठिनाई, क्षति या असमंजस में न डाले। दांपत्य जीवन के बीच ब्रह्मचर्य की निष्ठा का जितना प्रभाव होगा, उतना ही पारस्परिक सद्भाव प्रगाढ़ होता जाएगा और वह लाभ मिलेगा, जिसे प्राप्त करना विवाह का मूल प्रयोजन है।

जननेंद्रिय का अमर्यादित उपयोग यौन रोग उत्पन्न करता है। विशेषतया नारी को तो इससे अत्यधिक हानि उठानी पड़ती है। औसत नारी महीने में एकाध बार से अधिक काम-क्रीड़ा का दबाव सहन नहीं कर सकती। प्रजनन की दृष्टि से हर बच्चे के बीच कम-से-कम पाँच वर्ष का अंतर होना चाहिए। जल्दी-जल्दी बच्चे उत्पन्न करने और काम-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
क्रीड़ा का अधिक दबाव पड़ने पर नारी अपना शारीरिक ही नहीं, मानसिक स्वास्थ्य भी खो बैठती है। दैनिक काम-क्रीड़ा का स्वरूप हँसी-विनोद, मनोरंजन, चुहल, छेड़छाड़ तक सीमित रहे, तभी ठीक है। हर्षोल्लास बढ़ाने वाले छिटपुट क्रियाकलाप चलते रहे, तो चित्त प्रसन्न रहता है, परस्पर घनिष्ठता बढ़ती है और सान्निध्य का मनोवैज्ञानिक ही नहीं काम-प्रयोजन भी पूरा हो जाता है। यौन संपर्क को यदा-कदा तक सीमित रखना चाहिए। आएदिन की इस विडंबना में फँसकर मनुष्य अपना स्वास्थ्य ही नष्ट नहीं करता, प्रतिक्रिया के आनंद से भी वंचित हो जाता है। कामुक व्यक्ति बहुत घटिया और उथला आनंद ले पाते हैं। उसमें जो ऊँचे स्तर का उल्लास है, उसे प्राप्त करने के लिए देर तक ही संगृहीत शक्ति होनी चाहिए। जिन्हें यौन रोगों से बचना हो, उन्हें इस प्रकार की सतर्कता रखना ही चाहिए।

इस संदर्भ में यह समझ लिया जाए कि जननेंद्रिय का सीधा संपर्क मस्तिष्क से है। वहाँ जो कुछ गड़बड़ होगी, उसका सीधा प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ेगा। मनोविज्ञानवेत्ताओं के अनुसार उचित समय पर उचित कामसेवन को अवसर न मिलने से जहाँ अपस्मार, मूर्च्छा, भूत-प्रेत, अनिद्रा, चिड़चिड़ापन, स्मरण शक्ति की कमी, सिरदरद, हृदय रोग, नाड़ी विकृति आदि रोग उत्पन्न होते हैं, वहाँ अति कामसेवन भी ऐसे ही उद्वेग उत्पन्न करता है। लंपटों का शरीर जितना क्षीण होता है, मन उससे भी अधिक विक्षिप्त, असंतुलित रहने लगता है। उन्हें अनेक मानसिक रोगों से त्रस्त पाया जाएगा, जिन्होंने कामसेवन की दिशा में अति बरती।

कामसेवन का वैज्ञानिक स्वरूप यह है कि शरीरों की विद्युतशक्ति का इस प्रयोग द्वारा अति द्रुतगति से प्रत्यावर्तन होता है। मानवीय विद्युत की मात्रा शरीर में भी पाई जाती है, पर उसका भंडार चेतन संस्थान में ही देखा-पाया जाता है। यौन संस्थान की नींव में यह बिजली अकूत मात्रा में भरी पड़ी है। जैसे ही जननेंद्रिय निकट आती है, वैसे ही प्रसुप्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
शक्तिबीज सजग एवं प्रबल हो उठता है और तत्काल दोनों पक्ष अपनी विद्युत शक्ति का विनिमय करने लग जाते हैं। ऋण विद्युत धारा धन की ओर और धन धारा ऋण की ओर दौड़ने लग जाती है। नर, नारी को और नारी, नर को अपना शक्ति-प्रवाह प्रस्तुत करते हैं। इस सम्मिलन एवं प्रत्यावर्तन का ही वह परिणाम है, जो कामसेवन के आनंद के रूप में उस क्षण अनुभव किया जाता है। यह विशुद्ध रूप से प्राण और रयि शक्ति के, अग्नि और सोम के परस्पर प्रत्यावर्तन की अनुभूति है। यह प्रयोग अति महत्त्वपूर्ण है उससे जहाँ व्यक्तित्वों का विकास हो सकता है, वहाँ विनाश भी संभव है। प्रबल विद्युत धारा वाला पक्ष, निर्बल पक्ष को अपना अनुदान देकर उसे ऊँचा उठने और परिपुष्ट बनने में सहायता कर सकता है, पर जिसके शरीर में क्षीण प्राण है, वह साथी को क्षति पहुँचा सकता है।

वेश्या शरीर का क्षरण करते रहने पर भी अपना रूप-सौंदर्य बनाए रहती है। इसके कारण शरीरशास्त्री नहीं बता सकते। इसका उत्तर प्राण-विद्या के ज्ञाताओं के पास है। वह मनस्वी कामुकों की शक्ति चूसती रहती है और जिस स्थिति में सामान्य गृहस्थ नारी मृत्यु के मुख में जा सकती थी उस स्थिति में भी अपने चेहरे पर चमक और शरीर में स्फूर्ति बनाए रहती है। यदि उसके प्रेमी घटिया स्तर के रोगी या मूर्ख स्तर के हों, तो फिर उसका स्वास्थ्य और तेज कभी स्थिर न रहेगा। शरीर की दृष्टि से युवाकाल में नर-नारियों में बिजली अधिक रहती है; इसी से उसका आकर्षण युवावर्ग के साथ कामसेवन की लालसा सँजोये रहता है। शरीर में विद्युतशक्ति है तो, पर थोड़ी और घटिया स्तर की ही पाई जाती है। असली शक्ति भंडार मस्तिष्क और हृदय में भरा रहता है। स्वस्थ और सुंदर व्यक्ति भी यदि मनोबल की दृष्टि से घटिया है तो इस संदर्भ में अशक्त ही माना जाएगा। कुरूप और ढलती आयु का व्यक्ति भी उसके आंतरिक स्तर के अनुरूप प्रबल प्राण रह सकता है। असलियत यह है कि शरीर की स्थिति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
से प्राण क्षमता का संबंध बहुत ही कम है। किसी भी आयु में मन:स्थिति के अनुरूप प्राण-प्रबलता या न्यूनता हो सकती है और उसका लाभ-हानि साथी को भोगना पड़ सकता है।

यों ब्रह्मचर्य सभी के लिए उचित है, पर उन प्राणसंपन्न उच्च व्यक्तित्वों के लिए बहुत ही आवश्यक है। वे इस प्रकार का व्यतिक्रम करके अपनी प्रगति को ही रोक देंगे। साथी को उतना लाभ न मिलेगा, जितनी स्वयं क्षति उठा लेंगे। इसलिए ब्रह्मचर्य की महत्ता असंदिग्ध है। प्राण को संचित करते रहा जाए और यदा-कदा उसका उपयोग काम-क्रीड़ा में कर लिया जाए तो साथी की सहायता की दृष्टि से भी समर्थ पक्ष की यही बुद्धिमत्ता होगी। कामुक व्यक्ति बाहर से ही चमक-दमक के भले ही दीखें, भीतर से खोखले होते हैं और वे जिससे भी संपर्क बनाते हैं, उसी की शक्ति चूसने लगते हैं। लंपट व्यक्ति के साथ दांपत्य जीवन बनाकर उसका साथी शारीरिक और मानसिक क्षति ही उठा सकता है। क्षीण प्राण वाला व्यक्ति समर्थ पक्ष की हानि ही कर सकता है। ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी ही अपनी विशेष विद्युत धाराओं से एकदूसरे को लाभान्वित कर सकते हैं। प्रशंसनीय केवल इसी स्तर का कामसेवन कहा जा सकता है, जिससे प्रबल शक्ति-प्रवाह का लाभ दोनों ही पक्ष अपनी-अपनी आवश्यकता की पूर्ति और अतृप्ति निवारण के लिए कर सकें।

संतान उत्पादन के सत्परिणाम संयमशीलता पर निर्भर हैं। कामुकता की दिशा में अति करने वाले दंपती कुछ ही दिनों में अपनी जननेंद्रियों की मूल सत्ता को खो बैठते हैं। ऐसे पुरुष नपुंसक और नारी को बंध्या होते देखा जाता है। गर्भ रहे भी तो गर्भपात होने, दुर्बल या मृत संतान होने का खतरा बना रहता है। ऐसे माता-पिता मूर्ख, दुर्गुणी, रोगी, अविकसित संतान ही उत्पन्न कर सकते हैं। समर्थ संतान के लिए जिस परिपक्व शुक्र की आवश्यकता है, उसका निर्माण ब्रह्मचारी जीवन से ही संभव है। पुष्ट शरीर वाले युवक-युवती मिलकर पुष्ट शरीर वाले बालक को तो जन्म दे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
सकते हैं, पर उसकी मन:स्थिति बुद्धिमत्ता एवं तेजस्विता अपूर्ण ही रह जाएगी। आंतरिक समस्त विशेषताएँ और विभूतियाँ प्राणशक्ति से संबंधित हैं। प्राण का परिपाक ब्रह्मचर्य ही कर सकता है। इसलिए जिन्हें आंतरिक दृष्टि से मेधावी, प्रतिभावान, दूरदर्शी संतान अपेक्षित हो उन्हें अपनी अंत:क्षमता की सुरक्षा एवं परिपुष्टि का ध्यान रखना चाहिए। यह उपलब्धि अधिक संयम से ही प्राप्त कर सकना संभव है।

दो वस्तुएँ मिलने से तीसरी बनने की प्रक्रिया रसायन कहलाती है। कैमिस्ट्री इस विज्ञान का नाम है। रज-वीर्य के मिलने से भ्रूण की उत्पत्ति होती है और नौ महीने की अवधि पूरी करते ही भ्रूण बालक के रूप में प्रसव होता है। यह स्थूल गर्भ धारण या प्रजनन हुआ। इसके अतिरिक्त भी एक प्राण प्रत्यावर्तन होता है, जिसे अनेक अवसरों पर, अनेक रूपों में देखा जा सकता है। शिष्य के प्राण में गुरु अपनी शक्ति प्रतिष्ठापित करके उसकी मेधा और विद्या को प्रखर बनाता है। यह कार्य स्कूली मास्टर नहीं कर सकते, वे तो बेचारे मात्र जानकारी दे सकने वाले पाठ भर पढ़ा सकते हैं। वह विद्या जो शिष्य को गुरु के समान ही प्रखर बना दे केवल तपस्वी गुरुओं द्वारा ही उपलब्ध हो सकती है। योगी अपने साधकों को शक्तिपात करते हैं, वे अपनी तप:शक्ति शिष्य को देकर बात-की-बात में उच्च भूमिका तक पहुँचा देते हैं। मरणासन्न रोगी को रक्तदान देकर पुनर्जीवन प्रदान किया जा सकता है। इसी प्रकार दुर्बल प्राण को सबल बनाने का कार्य शक्ति प्रत्यावर्तन जैसी प्रक्रिया से संभव होता है। कामसेवन का ऊँचा स्तर यही है। वह बच्चे पैदा करने के लिए नहीं, दो प्राणों के समन्वय से एक नवीन प्रतिभा विकसित करने के लिए किया जा सकता है।

'काम' विज्ञान है, जिसमें प्रयोक्ता की नियति, लक्ष्य और परिणाम की प्राप्ति का प्रयोग सन्निहित है।

❐❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ० प्र०)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

मिशन की पत्रिकाएँ

(१) अखण्ड ज्योति (मासिक)

(धर्म एवं अध्यात्म के तत्त्वज्ञान का विज्ञान एवं तर्क-तथ्य-प्रमाण की कसौटी पर खरा चिंतन)

वार्षिक शुल्क-180.00, आजीवन शुल्क-3500.00 रुपया।

अखण्ड ज्योति अंग्रेजी (द्वि-मासिक)

वार्षिक शुल्क-120.00 रुपया

पता : अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा-281003

फोन : (0565) 2403940

(२) युग निर्माण योजना (मासिक)

(व्यक्ति, परिवार, समाज निर्माण एवं सात आंदोलनों की मार्गदर्शक पत्रिका)

वार्षिक शुल्क-90.00, आजीवन शुल्क-1800.00 रुपया।

युग शक्ति गायत्री (गुजराती मासिक)

(गायत्री महाविज्ञान, धर्म, अध्यात्म एवं युगानुकूल विचार परिवर्तन का मार्गदर्शन)

वार्षिक शुल्क-150.00, आजीवन शुल्क-3000.00 रुपया।

पता : युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा-3

फोन : (0565) 2530128, 2530399

फैक्स : (0565) 2530200

(३) प्रज्ञा अभियान (पाक्षिक)

(युग निर्माण मिशन के क्रियाकलापों एवं मार्गदर्शन का समाचार-पत्र)

वार्षिक शुल्क-40.00 रुपया।

पाक्षिक वीडियो पत्रिका : युग प्रवाह

(युग निर्माण मिशन के प्रमुख क्रियाकलापों की दृश्य-श्रव्य जानकारी)

वार्षिक शुल्क-500.00 रुपया।

पता : शांतिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड) फोन : 01334-260602

5/-

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षों में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org